Acknowledgement

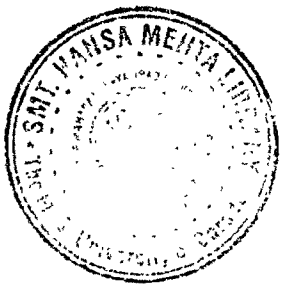

: ऋण निर्देश :

अपना शोध प्रबंध लिखने के बाद ऋण निर्देश नहीं करुँ तो यह सही नहीं होगा। मेरी प्रारंभिक शिक्षा मराठी माध्यम में हुई। स्नातक हो ने बाद मुझे गुजरात विद्युत बोर्ड में नोकरी मिल गयी। नौकरी साथ-साथ मैने तबले में मास्टर डिग्री हासिल की। क्यों कि मुझे संगीत से बेहत लगाव था। जिससे कारण तबले का रोज समयानुसार रियाज़ करता था। साथमें अन्य संगीत संस्थाओं में कार्य भी करता हुं। जिसमें की संस्कार भारती जो राष्ट्रीय कक्षा की है स्थानिक संस्था निनाद कला केन्द्र, आमद संस्था जिसको प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी के शिष्य परिवार ने स्थापित किया है। इसका एक ही उद्देश्य है तबला एकल वादन के कार्यक्रम लोंगो को सुनने को मिले यह संस्था प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के मार्गदर्शन में स्थापित हुई थी। इस संस्था का एक ही उद्देश्य है कि अजराड़ा घराने का तबला सदैव बजता रहे। इसी उद्देश्य से कमिटी के हरेक सदस्य को तबले का एकलवादन कार्यक्रम बजाना ही पडता है।

इस संस्था में तबला वाद्य पर चर्चा सत्र जरुर रखते है। एंक बार चर्चा करते समय मैने इच्छा व्यक्त की, कि गुरुजी पर मैं कुछ लिखना चाहता हुँ

तभी मेरे सभी गुरु बंधुओने मुझे प्रोत्साहन दिया। इसमें मेरे गुरु बंधु डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी का मुझे बड़ा सहयोग मिला उन्हे मैं कदापी भूल नही पाऊंगा। उन्होंने मुझे कहा की सर पर आप शोध प्रबंध जरुर लिखे जब गुरुजी का इतना बडा योगदान रहा है कि इस पर शोधप्रबंध होना चाहिये। शोधप्रबंध किस प्रकार से लिखना है इसकी मेथोडोलॉजी कैसी होती है इसके बारे में उन्होंने समझाया। आखिर गुरुजी से मैने और डॉ. अष्टपुत्रेजी ने इस विषय पर बातचित की, सर मै आप के बारे में कुछ लिखना चाहता हू। तभी गुरुजी ने कहा की "यार मेरे पर ज्यादा से ज्यादा दस पन्ने लिखोगे"। ऐसी मेरे में क्या बात है कि मुझ पर इतना बडा शोधप्रबंध हो सकाता है।

इसके बाद गुरुजी से अनुमति ले कर मैने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया। फॅकल्टी के धृपद धमार गायक श्री. श्रीकांत चतुर्वेदीजी मेरे अधिकृत मार्गदर्शक बने। आपके मार्गदर्शन में आपने मुझे प्रोत्साहित किया। काफी लिखने के बाद मेरे मन में एक यक्ष प्रश्न उठा, कि जो मैने लिखा है वह साहित्य की दृष्टि से कितना सही और उचित है? परंतु ईश्वरी कृपा से मुझे डॉ. मधु शर्माजी का सहयोग प्राप्त हुआ आपने हिन्दी साहित्य में डॉक्टरेट किया है। आपने अपना कीमती समय निकाल कर कम समय में मेरे शोध प्रबंध को साहित्यिक बनाने में मदद की। मैं उनका हृदय पूर्वक आभारी हुँ।

मेरे शोध प्रबंध लिखते समय दो दुःखद घटनाए घटी, एक तो मेरे प्रिय गुरुजी का दिनांक ३०-११-२००७ को देहान्त हुआ। इस घटना का साक्षी होने के कारण मेरा दिल इस कार्य से उठ गया और आगे का कार्य मैने बंध कर दिया। यह बात मेरी गुरुमाता श्रीमती प्रज्ञाबहन ने सुनी, तुरंत उन्होंने मुझे घर बुलाकर आज्ञा दी, कि आपको शोध प्रबंध का कार्य आगे बढ़ाना है और गुरुमाताके आज्ञानुसार मैने अपना कार्य आगे बढ़ाया। काफ़ी बातें मुझे उन्होंने बतलायी, जिससे कार्य संपूर्ण करने में मदद मिली। दुसरी घटना मेरे पुज्य पिताजी का देहावसान दिनांक ५-१२-२००८ को हुआ, इस घटना से मेरा दिल पुरी तरह टूट गया था, मेरे शोधप्रबंध का काम रुक गया किंतु मेरी धर्मपत्नी सौ भाग्यश्री पेंडसे और मेरी सुपुत्री भक्ती पेंडसे ने मेरा कार्य आगे बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित किया, परिवार ने मुझे साथ दिया मेरे सुपुत्र श्री भूषण पेंडसे ने मुझे काफ़ी मदद की और गुरुजी की बनायी हुई रचनाओं का नोटेशन कर के दिया इन सभी का मैं अभारी हुं। मेरे इस कार्य में मेरे ऑफीस के मेरे मित्र श्री कमलेश गज्जर, श्री विजय जनसारी, श्री के. जी मकवाणा, श्री. मनजीतसिंह सोढी, श्री कमलेश शर्मा, श्री. अंकुर. शहा और मेरे उच्च अधिकारी एवं स्टाफ ने मुझे बहुत सहकार दिया इन सभी का हृदय पूर्वक आभारी हुँ।

इसी के साथ मेरे मित्र श्री जितेन्द्र कर्वे, सौ. दिपाली भोळे, श्री चिरायु भोळे, श्री. नंदकिशोर दाते, श्री. केदार मुकादम, कु. निवेदिता थोरात, सौ. मेघना अष्टपुत्रे एवं कॉलेज के मेरे गुरुजन एवं स्टाफ मित्रों तथा म्युजिक कॉलेज की लायब्ररी की सहायता प्राप्त हुइ इन सभी का मैं आभारी हुँ।